कलीसिया अध्याय 26

1	**प्रार्थना**

समूह अगुवा। अपने समूह तथा कलीसिया निर्माण करने के सम्बन्ध में इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **लूका 4:31-7:50**

अपनी बारी आने पर संक्षेप में ***साझा करें*** (*या* अपने नोट्स से *पढ़ें*) कि आपने दिये गये अनुच्छेद (लूका 4:31-7:50) से शान्त समय में क्या सीखा।
अगर कोई व्यक्ति अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**याद करना** (5 मिनट) *[मसीही विवाह]* **(2) इफिसियों 5:23,25**

दो लोग साथ मिलकर ***पुनरावलोकन*** करें।
(2) प्रेम व मार्गदर्शन करें। इफिसियों 5:23,25। क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है और स्वयं ही देह का उद्धारकता है। हे पतियो, अपनी अपनी पत्नी से प्रेम रखो जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 11:1-57**

परिचय। एक साथ मिलकर, बाइबल अध्ययन करने के पांच कदमों के तरीके का इस्तेमाल करते हुए **यूहन्ना 11:1-57** का अध्ययन करें। यूहन्ना अध्याय 11 (यूहन्ना 10:40-11:57) में यीशु मसीह की पिरिया (लूका 13:22-19-27) और बैतनिय्याह में ईसा.प. 29 दिसम्बर से लगभग ईसा.प फरवरी 30 तक (3 महीने) की सेवाकाई का वर्णन किया गया है।

यूहन्ना 11:1-44 में यीशु मसीह ने, लाज़र को मुर्दों में से जीवित करने के लिए, यरदन से बैतनिय्याह की यात्रा की, जो यरूशलेम के नज़दीक था। लाज़र को मुर्दों में से जीवित कर देना बाकि सारे चमत्कारों और चिन्हों से बढ़कर था और इस चमत्कार ने प्रमाणित किया कि यीशु वास्तव में मसीह था। जिस प्रकार से यीशु मसीह द्वारा रोटियों का गुणा किया जाना इस बात को चिन्हित करता है कि वह जीवन की रोटी है(6:35), और जन्म के अन्धे को आंखें प्रदान करना इस बात का प्रतीक था कि यीशु मसीह जगत की ज्योति है(8:12), उसी प्रकार से लाजर का मुर्दों में से जिलाया जाना साबित करता है कि वह अर्थात यीशु

मसीह पुनरूत्थान और जीवन है(11: 25)। इस चमत्कार के बाद यहूदी परिषद ने यीशु को मारने के अपने विचार पर पूरी तरह से मुहर लगा दी(11:47-55)।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 11:1-57 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

11:9-10

खोज 1. **परमेश्वर द्वारा दिये गये लक्ष्य को पूरा करने हेतू दिया जाने वाला समय।**

चेलों ने परिस्थिति को देखते हुए यीशु को यहूदा में वापस न आने का सुझाव दिया, क्योंकि वहां के यहूदी यीशु की हत्या करना चाहते थे। लेकिन यीशु ने उन्हें यह कहते हुए जवाब दिया कि, *दिन की ज्योति में काम करने के लिए एक नियत समय होता है।* इसलिए मनुष्य को ज्योति के रहते चलना या काम करना चाहिए। यीशु के कहने का अर्थ था कि परमेश्वर ने यीशु को धरती पर रहने और रहकर काम पूरा करने का एक नियत समय आवंटित किया है। वह समय चेलों के चाहने से न तो बढ़ाया जा सकता है और न ही शत्रु के षड़यन्त्र के कारण कम किया जा सकता है। परमेश्वर महान है और उसने हर व्यक्ति के लिए जो समय नियुक्त किया है उसे इस संसार की किसी भी परिस्थिति की वजह से बदला नहीं जा सकता है! परमेश्वर पिता ने मुझे भी धरती पर रहने तथा इस धरती पर परमेश्वर द्वारा दिये गये लक्ष्य को पूरा करने के लिए एक नियुक्त व नियत समय प्रदान किया है। इसलिए जब तक मैं परमेश्वर की योजना के प्रकाश में होकर चलता हूँ, मुझे किसी भी तरह मनुष्य या किसी भी परिस्थिति से डरने की कोई जरूरत नहीं है। मुझे न तो किसी प्रकार की चोट पहुंचेगी और न ही मैं असफल होऊँगा! हमें परमेश्वर में कितना अद्भुत निश्चय प्राप्त है कि परमेश्वर सारे सौर्य मण्डल के सिंहासन पर विराजमान है और वह हर जन व हर परिस्थिति पर नियन्त्रण रखता है(पढ़ें मत्ती 10:28-31)।

11:33-35

खोज 2. **यीशु किस तरह अपनी आत्मा में उदास हुआ।**

जब यीशु ने मरियम और यहूदियों को जो उसके साथ आए थे रोते हुए देखा तो "आत्मा में बहुत ही उदास और व्याकुल हुआ"।

पहले शब्द "आत्मा में बहुत उदास हुआ" का अर्थ है "घोड़े के समान फुफकारना" या "क्रोधित या अप्रसन्न होना" है। जब यीशु ने लोगों को दु:खी होते हुए देखा, तो वह क्रोध से भर गया! क्यों? वह पाप को देखकर उसके विरूद्ध क्रोध से भर गया, क्योंकि हर एक दु:ख या कष्ट या मृत्यु का कारण होता है। लेकिन यीशु *अपनी आत्मा में* उदास था उसके चेहरे पर कोई उदासी नहीं थी। लेकिन लिखा गया शब्द क्रोध की बजाय *सहानुभूति* को अभिव्यक्त करता है। इसलिए यहां पर इस वाक्य का अर्थ पीड़ित या दु:खी लोगों के लिए "सहानुभूति" से भर जाना हुआ"।

दूसरे शब्द "आत्मा में व्याकुल होने का अर्थ" "अन्तर्आत्मा में हिल जाना" है और यूहन्ना 12:27 में इसका अर्थ जी व्याकुल हो जाना बताया गया है। इसका अर्थ हुआ कि "वह जी व्याकुल हो जाने की वजह से झुंझला गया"। जब यीशु ने लोगों के कष्टों को देखा तो वह भी प्रत्यक्ष रूप में झुंझला गया।

कुल मिलाकर ये दोनों शब्द इस तथ्य को प्रदर्शित करते हैं कि यीशु मसीह लोगों के दु:खों और कष्टों की जड़ अर्थात पाप को देखकर क्रोधित था, लेकिन उसने दुखित व कष्ट सहने वाले लोगों के प्रति अपनी ओर से सहानुभूति भी प्रगट की। अन्ततः यीशु के आसूं बहने लगे। उसके आंसू दुखी व कष्ट में पड़े लोगों के प्रति सहानुभूति की सच्ची अभिव्यक्ति थे। मैं भी यीशु के समान ही अपनी सहानुभूति को लोगों के लिए व्यक्त करना पसन्द करूंगा। मैं पाप के प्रति तो क्रोधित होना वरन पाप के परिणाम के कारण दु:ख सहने वाले लोगों के प्रति सहानुभूति व्यक्त करना चाहता हूँ!

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये यूहन्ना 11:1-57 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

11:12-13

प्रश्न 1. **मसीही लोग मृत्यु और पुनरूत्थान को क्या मान्यता देते हैं?**

ध्यान दें।

(1) मृतकों की आत्मा घरों में या कब्रों में ही भटकती नहीं रहती है।

बाइबल हमें बताती है कि मृतकों की आत्मा उनके घरों में भी घूमती नहीं रहती है। न ही आत्माएं अपनी कब्रों में वास करती है। इसलिए मसीही लोग न तो मृतकों की आत्माओं से डरते और न ही इस मान्यता पर विश्वास करके कि वे घरों में, कब्रों में, या मन्दिरों में या कहीं और वास करती हैं, उनकी उपासना या पूजा नहीं करते। बाइबल हमें शिक्षा देती है कि मृतकों की आत्मा देहान्त के तुरन्त बाद स्वर्ग या नरक में से एक जगह पर तुरन्त चली जाती है। फिलिप्पियों 1:23 के अनुसार मसीही जन की मृत्यु "इस संसार से कूच करके, *मसीह के साथ मसीह के साथ जीवन व्यतीत करना है*"।

(2) बाइबल में "मृत्यु" की तुलना अधिकतर "सोने" से की जाती है।

उदाहरण के लिए, मत्ती 27:25 में लिखा है, "कि कब्रें खुल गई, और सोये हुए पवित्र लोगों के बहुत से *शव* जी उठे"। यह तुलना इस अर्थ को प्रगट करती है कि जो लोग सो गये है वे महिमित रूप में जी उठेगें। मुर्दों में जी उठने की इस घटना को बाइबल में देहों का पुनरूत्थान कहा जाता है। जब यीशु ने कहा कि, "हमारा मित्र लाज़र सो गया है" तो उसका अर्थ था कि "लाज़र मर चुका है, लेकिन उसकी देह मृतको में से पुनः जीवित हो जाएगी!"

(3) मृतक की आत्मा धरती पर घटी इस घटना के प्रति अचेत होती है।

हालांकि बाइबल में मृत्यु को सोने या निद्रा के रूप में दर्शाया गया है लेकिन इसका अर्थ यह बिल्कुल नहीं है कि मनुष्य की आत्मा पूरी तरह से अचेत अवस्था में सोई हुई है। वह आत्मा केवल उस संसार के प्रति पूरी तरह अचेह होती है जिसे उसने छोड़ दिया होता है। अब्राहम या याकूब जैसे मृतक लोगों की आत्मा, संसार में रहने वाले लोगों को न तो देख सकते हैं और न ही उनकी दशा को जानते हैं(यशायाह 63:16)। मृतक "कुछ नहीं जानते" और इस धरती पर जो कुछ वर्तमान में होता है, उसमें उनका कोई भाग नहीं होगा"(सभोपदेशक 9:5-6)। हालांकि वह धनी व्यक्ति, जो मर चुका था, अपने उन पांच भाईयों के बारे में सोचता है जो अभी इस संसार में जीवन व्यतीत कर रहे थे, लेकिन वह यह नहीं जानता था कि वे अपना जीवन वर्तमान में किस प्रकार व्यतीत कर रहे होगें और न ही वह उनसे कोई बातचीत कर सकता था(लूका 16:23-31)। मृतकों की आत्माएं इस धरती पर घटने वाली घटनाओं के प्रति पूरी तरह अचेत होती हैं और वे धरती पर रहने वाले लोगों से कोई सम्पर्क बना कर नहीं रख सकतीं। वे धरती पर वास करने वाले लोगों के जीवन के लिए कोई योजना नहीं बना सकते, कोई काम नहीं कर सकते और उन पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं डाल सकते हैं। 1शमूएल 28 में दर्शायी गयी घटना एक दुष्टात्मा की विपरीत नकल है।

(4) मृतकों की आत्मा स्वर्ग और नरक में जाते समय पूरी तरह सचेत अवस्था में होती है।

लूका 16:23-31 में, हम पढ़ते हैं कि मृतकों की आत्मा अचेत अवस्था में नहीं वरन पूरी तरह से सचेत अवस्था में होती हैं। वे नरक में मिलने वाली यातना व स्वर्ग में मिलने वाले आराम दोनों को अनुभव कर सकते हैं। मृतकों की आत्मा उस संसार के प्रति पूरी तरह सचेत होती है जिनमें उनको भेजा जाता है! वे परमेश्वर, मसीह तथा अब्राहम के जैसे स्वर्ग में पाये जाने वाले सभी लोगों को पहिचानती हैं। वे परमेश्वर की उपस्थिति में रहती, उसके साथ बातचीत करतीं, उसकी आराधना करती और उसकी सेवा करती हैं।

11:25-26

प्रश्न 2. **यीशु ने जब कहा कि एक मसीही जन कभी नहीं मरेगा तो उसका क्या मतलब था?**

ध्यान दें।

25-26 में यीशु कहते हैं, "पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूँ; जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जिएगा। और जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है वह अनन्तकाल तक न मरेगा"।

(1) यीशु कहते हैं कि "पुनरूत्थान और जीवन मैं ही हूँ"।

इसका अर्थ है कि मृतकों में से जी उठना पूरी तरह से यीशु मसीह से जुड़ा या अविच्छेदित मामला है। इस वाक्य को कुछ इस तरह से भी अनुवाद किया जा सकता है "पुनरूत्थान और जीवन मसीह है" जिसका अभिप्राय यह होगा कि मृतकों में से जी उठना और अमर जीवन मसीह यीशु में ही निहित हैं(प्रकाशितवाक्य

1:18)। क्योंकि मसीह खुद मृतकों में से जी उठा और अमर है, इस कारण मसीह भी मृतकों में से जी उठेगें और अमर हो जाएंगे। यीशु मसीह ही पुनरूत्थान व अमर जीवन का स्रोत है।
आज के दिन तक यीशु मसीह मृतकों में से जी उठने वालों में "पहला फल" है(1 कुरिन्थियों 15:23) अर्थात, प्रथम व एकमात्र जन जो अभी तक मुर्दों में से जी उठा है। मसीह लोग केवल मसीह के द्वितीय आगमन पर ही मृतकों में से जीवित होगें और अमरता के भागीदार बनेगें।

(2) यीशु कहते हैं, "जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह यदि मर भी जाए तौभी जिएगा।"

जब लाज़र बहुत बीमार हो गया तो, उसकी बहनों ने यीशु के पास एक संदेश को भेजा। पद 4 में, यीशु ने कहा, "यह बीमारी मृत्यु की नहीं; परन्तु परमेश्वर की महिमा के लिए है, कि उसके द्वारा परमेश्वर के पुत्र की महिमा हो।" लेकिन यीशु तुरन्त लाजर को चंगा करने के लिए रवाना नहीं हो गये। उनसे वहां से चलने में देरी की, और जिसके कारण जब तक यीशु बैतनिय्याह पहुंचा, लाजर को मरे हुए चार दिन हो चुके थे और अब सम्भवत: उसका बदन सड़ने लगा था। पद 21-22 में मार्था ने यीशु से कहा, "हे प्रभु, यदि तू यहां होता, तो मेरा भाई कदापि न मरता। और अब भी मैं जानती हूँ कि जो कुछ तू परमेश्वर से माँगेगा परमेश्वर तुझे देगा।" यह उलाहना या अप्रसन्नता की अभिव्यक्ति नहीं थी, लेकिन उन वाक्यों के द्वारा वह अपने दु:ख को प्रगट कर रहे थे। वह जानती थी कि यीशु मसीह ने लाजर को चंगा करने हेतू पहुंचने में बहुत देर कर दी है। लेकिन उसे अब भी एक हल्की सी आशा थी कि यीशु मसीह अब भी उसे जीवन प्रदान कर सकते हैं। उसके दिमाग में, मार्था ने इस उम्मीद को नहीं त्यागा था कि लाज़र को अब भी मृतकों में से जीवित नहीं किया जा सकता है। उसके परिवार का एक प्रिय सदस्य गुज़र गया था, जिसकी वजह से उसके मन में एक द्वन्द युद्ध चल रहा था। हालांकि वह विश्वास करती थी कि अन्त में न्याय के दिन लाज़र मृतकों में से जी उठेगा लेकिन उसे इस बात का दु:ख भी था कि लाज़र अब उनके बीच में जीवित नहीं था। दूसरी तरफ, जो संदेश यीशु मसीह द्वारा दूत से कहा गया था, उस संदेश को सुनकर उसे उम्मीद थी कि कोई चमत्कार हो सकता है। दु:खों के अन्धकार और आशा की ज्योति के बीच एक घमासान युद्ध चल रहा था।

तब यीशु ने कहा, "जो कोई मुझ पर विश्वास करता है यदि मर भी जाए, अनन्त तक जीवित रहेगा।" यीशु की बात का उससे कहीं अधिक था जो मार्था ने विश्वास किया!

यह वाक्य मृत्यु के क्षण के बारे में बात करता है। हालांकि जो मसीह पर विश्वास करने वाला मसीही शारीरिक रूप में मृत्यु का स्वाद चखता है लेकिन वह आत्मिक तौर पर अनन्त तक जीवित रहता है। हालांकि उसकी देह पुन: मिट्टी में मिल जाती है लेकिन उसकी आत्मा कभी नाश नहीं होती है। उसकी आत्मा मसीह के जी उठने के जीवन अर्थात पुनरूत्थान तथा उस अनन्त जीवन के अधिकार का अनुभव करेगी जिसमें मृत्यु की कोई चर्चा नहीं होती। मृत्यु होने पर एक मसीही की देह मिट्टी में मिल जाती है, लेकिन उसकी आत्मा तुरन्त स्वर्ग में मसीह की उपस्थिति में प्रवेश कर जाती है। फिलिप्पियों 1:23 में पौलुस कहता है कि वह तो चाहता है कि कूच करके मसीह के पास जा रहूँ। उसकी मृतक देह सुन्न पड़ जाती है लेकिन उसकी जीवित आत्मा मसीह की उपस्थिति में अनन्त जीवन का अनुभव करती है। विश्वासियों का नश्वर शरीर नाश हो जाता है परन्तु आत्मा में उसका अनन्त जीवन अमर रहता है।

(3) यीशु ने कहा, "जो कोई जीवित है और मुझ पर विश्वास करता है वह अनन्तकाल तक न मरेगा।"

यह वाक्य हमें मृत्यु से पहले के समय के बारे में बताता है। मरने से पहले एक मसीही जन धरती पर रहते हुए जिस प्रकार का जीवन व्यतीत करता है वह उसकी पहिचान बन जाता है। जो जन आत्मिक जीवन व्यतीत करता और यीशु मसीह पर विश्वास करता है वह कभी अनन्त मृत्यु का स्वाद न चखेगा। 2 थिस्लुनिकियों 1:9 के अनुसार,"अनन्त मृत्यु" का अर्थ आत्मिक व शारीरिक तौर पर परमेश्वर की प्रिय व देखभाल करने वाली उपस्थिति से अलग हो जाना है। लेकिन एक मसीही विश्वासी के जीवन में वैसा क्षण कभी नहीं आता। उसकी आत्मा व उसकी देह परमेश्वर की उपस्थिति, उसके प्रेम व उसकी देखरेख से बिल्कुल अलग नहीं होती। वह इस संसार में जीवन व्यतीत करते हुए भी, उसकी आत्मा अनन्त जीवन और उसका नश्वर शरीर परमेश्वर के प्रेम और उसकी देखरेख का अनुभव कर सकता है।

देहान्त होने पर, व्यक्ति की आत्मा तुरन्त स्वर्ग में परमेश्वर की प्रत्यक्ष उपस्थिति में प्रवेश कर जाती है। हालांकि उसकी देह कब्र में चली जाएगी, लेकिन परमेश्वर उसकी आत्मा को कभी नाश नहीं होने देगा। यूहन्ना 5:25-29 के अनुसार, मसीह के दूसरे आगमन पर, ये शरीर अनन्तता के लिए जी उठेगें। फिलिप्पियों 3:23 के अनुसार वह हमारी दीन-हीन देहों को रूप बदलकर, अपनी महिमा की देह के अनुकूल बना देगा! 1 कुरिन्थियों 15:42-44 के अनुसार मसीहीयों की देह महिमित अमरता को पहन लेगीं!

सारांश। 25 पद में, यीशु ने यह प्रतिज्ञा की है कि मसीहियों का आत्मा कभी मृत्यु का स्वाद न चखेगा। और पद 26 में, वरन वह यह भी प्रतिज्ञा करता है कि कब्र में पड़ने के बावजूद परमेश्वर विश्वासियों की देह को त्याग नहीं देगा! चाहे मसीही जन शारीरिक तौर पर मर जाए, लेकिन न तो उसका आत्मा मरेगा, और न ही उसका शरीर मिट्टी में मिलने के बाद भी परमेश्वर की देखरेख से वंचित होगा।

11:47

***प्रश्न 3.* सन्हेद्रिन क्या था?**

ध्यान दें।

सन्हेद्रिन, इस्राएल में उच्चतम अदालत (मत्ती 5:22) और रोमन सम्राज्य में महासभा अर्थात उच्चतत प्रशासनिक परिषद था। इसकी स्थापना मक्काबीस के समय में हुई और इसे यरूशलेम में स्थापित किया गया। यह महासभा 71 महत्वपूर्ण सदस्यों से मिलकर बनी थी: जिसमें महायाजक, जो अति महत्वपूर्ण याजकीय परिवार के सदस्य थे, परिवार के मुखिया थे जिन्हें प्राचीन के नाम से जाना जाता था, सदूकी, जो यहूदी धर्मशास्त्र का अनुवाद करने में माहिर थे, व्यवस्थापक शामिल थे, जो अपने उपदेशों के द्वारा धर्मशास्त्र में लिखी हुई बातों का उल्लेख किया करते थे। उस समय का महायाजक उस सभा का अध्यक्ष हुआ करता था। सन्हेद्रिन यहूदियों के सारे धार्मिक मामलों पर नज़र रखा करता था, वरन उन यहूदियों के भी जो विदेशों में रहा करते थे।

11:49-52

***प्रश्न 4.* कैफा कौन था?**

ध्यान दें।

वह ई.प. 18-36 के दौरान महायाजक होने के कारण सन्हेद्रिन का अध्यक्ष भी था। उसने अनजाने में, यीशु मसीह के बारे में एक महत्वपूर्ण भविष्यवाणी की। यीशु परमेश्वर के लोगों अर्थात यहूदी राष्ट्र में रहने वाले

विश्वासियों के लिए मरेगा, और वह परमेश्वर के तितर-बितर लोगों को अर्थात अन्य देशों के विश्वासियों को इकट्ठा करेगा, और उन्हें एक राष्ट्र बनाएगा(यूहन्ना 10:16; 1 पतरस 2:9-10)।

11:47-53

प्रश्न 5. **कैफा के समान दुष्ट व्यक्ति भविष्यद्वाणी कैसे कर सकता है?**

ध्यान दें।

(1) कैफा का उद्देश्य।

कैफा ने कहा, "तुम कुछ भी नहीं जानते और न यह समझते हो कि तुम्हारे लिए यह भला है कि हमारे लोगों के लिए एक मनुष्य मरे, और सारी जाति नाश न हो।" इस बदमाश जन का मनसा भली नहीं थी। कैफा के कहने का अर्थ यह था कि यदि इस्राएल के लोग यीशु का अनुसरण कर लेते हैं, तो रोमी साम्राज्य आकर यहूदी राष्ट्र को नाश कर देगें। लेकिन अगर यीशु को मृत्यु मिलती है तो यहूदी राष्ट्र बच जाएगा। देशभक्ति के बहाने दुष्ट कैफा यीशु मसीह से बचने का प्रयास कर रहा था जो उसकी कीर्ति और एश्वर्य के बीच में सबसी बड़ी रूकावट था। लेकिन व्यंगात्मक तरीके से इसके बिल्कुल विपरीत हुआ। यहूदियों ने यीशु की हत्या करके, व्यक्तिगत तौर पर अपने और अपने देश के खिलाफ दण्डाज्ञा पर मुहर लगा दी। 70 ई.प. रोमियों ने आकर यरूशलेम और मन्दिर वरन सम्पूर्ण राष्ट्र को नाश कर दिया। कैफा द्वारा तैयार किया गया यीशु को मारने का षड़यन्त्र तो सफल हो गया लेकिन, जिस परिणाम की कामना कैफा कर रहा था उसका बिल्कुल उल्टा परिणाम हुआ।

(2) कैफा की भविष्यद्वाणी।

लेकिन पद 51-52 में यूहन्ना क्यों कहता है कि कैफा ने यह बात खुद से नहीं कही थी, लेकिन महायाजक के रूप में उसने यह भविष्यद्वाणी की थी कि यहूदी राष्ट्र के लिए यीशु मरेगा? यूहन्ना सिखाता है कि परमेश्वर इतिहास में महान है। इतिहास में कोई भी घटना परमेश्वर के निर्णय, आज्ञा, और नियन्त्रण के बगैर घटित नहीं होती(यशायाह 14:24,27)। परमेश्वर ने अद्भुत तरीके से कैफा के शब्दों पर अधिकार कर लिया कि उसकी बातों में इतना गहरा अर्थ समा गया जिसे कैफा स्वयं नहीं समझ पाया। कैफा ने न चाहते हुए भी उस वर्ष का महायाजक होने के नाते इस भविष्यवाणी। पुराने नियम के दिनों में, महायाजक ऊरीम और तुम्मीन की सहायता से परमेश्वर की इच्छा को प्रगट किया करते थे(निर्गमन 28:30)। अब परमेश्वर ने उसके द्वारा भविष्यद्वाणी करवाई, हालांकि उसे खुद नहीं पता था कि वह क्या कर रहा था। कैफा अपनी बातों के द्वारा लोगों को कुछ और समझाना चाहता था लेकिन परमेश्वर ने उसकी बातों के मतलब को पूरी तरह से बदल दिया।

जिस समय पर कैफा और सन्हद्रिन अर्थात महासभा मिलकर यीशु मसीह का मारने का षड़यन्त्र बना रहे थे, उसी बीच परमेश्वर मसीह की मृत्यु द्वारा संसार के कई लोगों के जीवन को बचाने की योजना तैयार कर रहे थे। जबकि कैफा कुछ बुरा करने की योजना बना रहा था क्योंकि उसकी बातें यही बयान करती हैं, उसी समय में परमेश्वर ने अपनी महिमित योजना को तैयार कर लिया। यह अनुच्छेद हमें परमेश्वर की श्रेष्ठता और मनुष्य की ज़िम्मेदारी के बीच सम्बन्ध के बारे में बताता है। कैफा अपने मन उठने वाली भ्रष्ट व दुष्ट बातों को कहने के लिए पूरी तरह से स्वतन्त्र था। फिर भी परमेश्वर की श्रेष्ठ इच्छा और शक्ति ने कैफा के शब्दों के अर्थ को पूरी तरह से बदल दिया जिससे कि उसकी क्रूर हत्या करने की योजना ने परमेश्वर के अदभुत उद्धार की योजना को प्रगट कर दिया। बिना अपनी बातों के मतलब को समझे बूझे ही, दुष्ट कैफा

एक भविष्यद्वक्ता बन गया। जिस प्रकार से परमेश्वर ने पुराने नियम में दुष्ट भविष्यद्वक्ता बिलाम के द्वारा बातें की थीं(गिनती 23), ठीक उसी तरह से उसने अब दुष्ट महायाजक कैफा के द्वारा बातचीत की।

11:51-52

प्रश्न 6. **क्या यीशु मसीह केवल यहूदी राष्ट्र के लिए ही मरे?**

ध्यान दें।

नहीं, उसने कहा, "यीशु केवल यहूदी राष्ट्र के लिए ही नहीं मरेगा, वरन परमेश्वर के सभी तितर बितर हुई सन्तानों के लिए, ताकि वह उन्हें इकट्ठा करके एक राष्ट्र बना सके"। कैफा ने *राजनैतिक* दृष्टिकोण से एक वाक्य का इस्तेमाल किया "इस्राएल राष्ट्र"। लेकिन यूहन्ना ने इसके *आत्मिक पहलू* का इस्तेमाल करते हुए "परमेश्वर की सन्तानों" लिखा। परमेश्वर की सन्तान वे लोग हैं जिन्होंने यीशु मसीह में विश्वास किया तथा नया जन्म पाया है। यीशु मसीह दो प्रकार के लोगों के लिए मरे:

- सर्वप्रथम "यहूदी समाज के विश्वास करने वाले परमेश्वर की सन्तानों के लिए"
- दूसरा, "परमेश्वर की उन सन्तानों के लिए जो अपनी विश्वास के कारण अन्य देशों में तितर बितर होकर रह रहीं हैं" अर्थात "परमेश्वर की वे सन्तानें जो अन्यजातियों में से हैं"।

यूहन्ना यहां पर उसी बात को दोहराता है जिसे यीशु ने यूहन्ना 10:16 में कहा था। यहूदी समाज में पायी जानी वाली उसकी *भेड़ों* के अलावा यीशु मसीह अन्यजातियों में पायी जाने वाली अपनी *भेड़ों* को लाने जा रहा है जो भविष्य में एक ही चरवाहे का एक झुण्ड कहलाएंगी!

यीशु ने यूहन्ना 12:32 में यही विचार सामने रखा, "जब मैं धरती पर से ऊपर उठाया जाऊंगा तो सारे लोगों को अपने पास खींच लूंगा।" अन्त में चाहे स्वेच्छा से या इच्छा के बिना, हर एक घुटना यीशु के सामने टिकेगा। और हर एक जीभ अंगीकार करेगी, चाहे वह विश्वासी हों या अविश्वासी, कि यीशु मसीह ही "प्रभु" है(फिलिप्पियों 2:9-11; देखें इफिसियों 1:10)।

11:55

प्रश्न 7. **यूहन्ना यहां पर किस यहूदी फसह की बात कर रहा है?**

ध्यान दें।

यहूदी फसह 1447 ई.पू मूसा की अगुवाई में हुए मिस्र से यहूदियों के निर्गमन का स्मरणोत्सव है। यूहन्ना, यीशु की ज़मीनी सेवाकाई में तीन यहूदी फसह की बात करता है:

- प्रथम फसह ई.प 28 अप्रैल में (यूहन्ना 2:13,23)
- दूसरा फसह ई.प 29 अप्रैल में (यूहन्ना 6:4)
- और तीसरा फसह ई.प. 30 अप्रेल में (यूहन्ना 11:55; 12:1; 13:1; 19:31)।

अन्य तीन सुसमाचारों में केवल अन्तिम फसह की चर्चा की गयी है।

कदम 4. प्रयोग करें। **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन से ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 11:1-57 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें। नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 11:1-57 से सम्भावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

11:4। यह जानते हुए की बीमारियों की जड़ संसार के पापों में छुपी होती हैं, कई बीमारियों के द्वारा परमेश्वर की महिमा हो सकती है।

11:6। याद रखें कि परमेश्वर पर वास्तव में भरोसा रखने के कारण तुरन्त प्रतिक्रिया करने की बजाय कुछ समय के लिए इन्तज़ार करना पड़ सकता है।

11:20-27। हालांकि लूका 10:38-42 में मार्था यीशु के चरणों में बैठकर परमेश्वर के वचनों को सुनने की बजाय इधर उधर के कामों में व्यस्त रही, लेकिन यहां पर वह यीशु से मिलने तथा उसके वचनों को सुनने के लिए बाहर निकली। मार्था बदली और आप भी बदल सकते हैं।

11:25। यद्यपि एक विश्वासी की देह नाश हो जाएगी लेकिन उसकी आत्मा या प्राण कभी नाश नहीं होगा, वरन वह अनन्तकाल के लिए यीशु की उपस्थिति में जीवित रहेगी। पुनरूत्थान के दिन नश्वर देह फिर जी उठेगी ओर अनश्वर देह को धारण कर लेगी।

11:26। यद्यपि एक विश्वासी की देह नाश हो जाएगी, लेकिन उसकी आत्मा और पुनरूत्थिन देह कभी नाश नहीं होगी, अर्थात उसे कभी नरक में नहीं डाला जाएगा।

11:33-35। यीशु मसीह के समान ही विश्वासियों को सारी बिमारियों की जड़ पाप से क्रोधित रहना चाहिए, लेकिन उन्हें कष्ट सहने वाले लोगों के प्रति हमदर्दी रखने वाला होना चाहिए।

11: 47-48। ध्यान रखें कि बहुत से धार्मिक लोग राजनैतिक शक्ति के दम पर परमेश्वर के राज्य की धार्मिकता को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं।

2. यूहन्ना 11:1-57 से व्यक्तिगत अनुप्रयोग के उदाहरण।

मैं ज़्यादा से ज़्यादा यीशु के समान बनना चाहता हूँ। जब यीशु ने दूसरों को कष्ट या तकलीफों में देखा, वह अपनी आत्मा में बहुत दुखी और उसका वह कष्ट प्रत्यक्ष रूप में प्रगट हुआ। यीशु बिमारियों की जड़ पाप से क्रोधित था, लेकिन उसे कष्ट सहने वाले लोगों के प्रति हमदर्दी थी। मैं भी यीशु के समान ही अपनी भावनाओं को प्रगट करना चाहूंगा: मैं निश्चय तौर पर पाप के प्रति क्रोधित होना चाहता हूं लेकिन साथ ही

साथ मैं उन लोगों के प्रति हमदर्दी भी रखना चाहता हूँ जो पापों के परिणाम को अपने जीवन में भुगत रहे हैं।

मैं अपने हर दिन का बहुतायत से इस्तेमाल करना चाहता हूँ। परमेश्वर ने मुझे इस धरती पर व्यतीत करने के लिए एक निर्धारित समय दिया है ताकि मैं उस समय में परमेश्वर द्वारा दिये गये कार्यों को पूरा कर सकूं। जब तक मैं परमेश्वर की योजना के प्रकाश में होकर चलता हूँ मुझे किसी व्यक्ति या किसी भी परिस्थिति से डरने की जरूरत नहीं है। मुझे कोई हानि नहीं होगी और नहीं मैं कभी असफल होऊँगा! इस अद्‌भुत निश्चय के साथ कि परमेश्वर हर व्यक्ति व हर परिस्थिति पर नियन्त्रण रखता है(मत्ती 10:29-31), मैं इस धरती पर परमेश्वर द्वारा दिये गये कार्यों को पूरा करना चाहता हूँ।

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 11:1-57 में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें।
(बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट) *[मध्यस्थता]* **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में ***लगातार प्रार्थना करें।*** एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)।

6	**तैयारी** (2 मिनट) *[निर्धारित कार्य]* **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह के अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. समर्पण: चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों।
2. यूहन्ना 11 के बाइबल अध्ययन के आधार पर किसी दूसरे व्यक्ति या समूह के साथ प्रचार करें, शिक्षा दें या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। **लूका 8:1-11:28** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।
4. याद करें। नयी नयी बाइबल पदों को याद करें व उन पर मनन करें। **(3) प्रेम व अधीनता: तीतुस 2:4-5।** रोज कम से कम 5 उन बाइबल आयतों को दोहराए जिन्हें आपने पहले याद किया था।

5. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।